International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 06-11-2021, Accepted: 22-11-2021, Published: 07-12-2021
Volume 7; Issue 6; 2021; Page No. 61-64

वैष्णव पाणी के गीतिनाट्य में जनवादी चेतना

चिन्मयी मिश्र
हिंदी विभाग, गेष्ट फ्याकल्टी, रेवेशॉ विश्वविद्यालय कटक, ओडिशा, भारत

सारांश
उन्नीसवीं शताब्दी के प्रथम भाग में ओडिशा की सामाजिक व्यवस्था, प्रशासन की कानून–व्यवस्था के साथ समान्तराल रूप से अलग प्रकार के ढंग से चल रही थी। सामाजिकता तथा धार्मीक भावावेग को ढाल बना कर धनीक वर्ग सरल, अनपढ, गरीब जनता पर अत्याचार तथा शोषण कर रहे थे। कवि वैष्णव पाणि का कवि– मानस इसे देख कर बेचौन होने लगा तथा सामाजिक परिवर्त्तन की तरकीबें सोचने लगा। दोनों वर्गों (धनीक, गरिब) की मानसिकता में जब तक परिवर्त्तन नहीं आयेगा, तब तक सामाजिक उत्थान असम्भव है। धनीक वर्ग को समझना चाहिए कि जिन गरिबों का वे शोषण कर रहे हैं, वे भी उनकी तरह इंसान हैं। इन गरिबों की बदौलत परिश्रम न करके भी वे शान–शौकत के साथ आसान की जिंदगी जी रहे हैं। दूसरे पक्ष में गरीबों में यह चेतना भरनी चाहिए कि आजादी उनका जन्मसिद्ध अधिकार है। किसी का अत्याचार एवं शोषण को झेलने के लिए उनका जन्म नहीं हुआ है। एक जनवादी दृष्टिकोण को लिए हुए वैष्णवपाणि जन– साधारणों में सामाजिक क्रांति की भावना भरने के लिए गीतिनाट्य लिखने लगे। अनपढ देहातियों की समझ में आये इसीलिए सरल देहाती भाषा को गीतिनाट्य की भाषा के रूप में चुनी एवं ज्यादातर कथावस्तुएँ पुराणों से लीं। गीतिनाट्यकार भिन्न–भिन्न प्रसंगों के बीच में तत्कालिन सुलगती समस्याओं जैसे अशिक्षा, कुसंस्कर, नशाखोरी, जात–पाँत की भेद–भावना, धनीकों की अहमिका, अवलाओं पर निर्यातना एवं परतंत्रता आदि के खिलाफ आवाज बुलंद करने लगे और उनके निराकरण के सुझाव भी बताते रहे जिनका अच्छा–खासा असर देहातियों में दिखाई देने लगा।)

मूलशब्द: ओडिआ, गीतिनाट्य, वैष्णव पाणी, जनवादी चेतना, ओडिशा

प्रस्तावना
वैष्णव पाणी का जन्म सन 1882, कुमार पूर्णमी के दिन ओडिशा के कटक जिले के कोठपदा नामक गाँव में, एक गरिब ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उनकी कवि–प्रतिभा जन्मजात थी। उनकी ग्रंथावली के प्रथम भाग से जानकारी मिलती है कि उन्होंने 109 गीतिनाट्य, 19 फार्श, 65 संगीत, उपन्यास, एवं काव्य लिखे हैं। किसी भी साहित्यकार के लिए इतनी रचनाओं का स्रष्टा बनना बहुत बडी उपलब्धी है और यह स्पष्ट कर देती है कि कवि ने अपने पूरे जीवन को साहित्य सृजन में ही लगा दिया था। उनकी काव्य–भाषा सरल, ठेठ ओडिआ थी। अनपढ, गँवार जनता भी उनकी रचनाओं को आसानी से समझ सकती है। इसलिये ओडिशा के घर–घर में वे 'गणकवि' के रूप में परिचित हैं। उनको गीतिनाट्य लेखन में सबसे अधिक ख्याति मिली थी। गीतिनाट्य रंगमंच पर मंचस्त होता है और दर्शक रंगमंच की चारों तरफ बैठ कर उसे रात भर देखते हैं। एक साथ संगीत, वाद्य, अभिनय, संवाद–योजना को सुंदर कथावस्तु में देखकर दर्शक झुम उठते हैं। आजकल भी उसकी लोकप्रियता बरकरार है। कवि के जन्म दिन के अवसर पर (कुमार पुर्णिमा) ओडिशा भर उनकी जयंती मनाई जाती है और उनके गीतिनाट्य मंचस्त भी किये जाते हैं।

चूँकि वैष्णव पाणि ओडिशा के एक गाँव में रहते थे, ग्रामीणों की समस्याओं को वे अच्छी तरह से समझते थे। उस समय गाँव में मुट्ठी भर धनीकों की राज चलती थी। इनकी छत्रछाया में गरीबों को जिंदगी बसेर करना पड्ता था। इनकी निर्यातना तथा बदसलूकी का विरोध करने की हिम्मत किसी के पास नहीं थी। जो ऐसा करने की जुर्रत करता था उसे ऐसी सजा (सामाजिकता के दायरे में तथा दाँव–पैंच खेलके कानूनी तौर पर भी) दी जाती थी कि भविष्य में वह कभी ऐसा करने की कल्पना भी नहीं सकता था एवं दुसरों के सामने यह एक सुलगता उदाहरण बनकर रह जाता था। धनीकों के शोषण तथा अत्याचार के अलावा अशिक्षा, कुशिक्षा, जात–पाँत की भेद–भावना, नशाखोरी, कुसंस्कार आदि गरीबों की आर्थीक एवं सामाजिक स्थिति को दिन पर दिन बदत्तर बनाते जाते थे। गरीबों के बेटे गुलामी में ही अपने भविष्य को देख रहे थे। अबलाओं की स्थिति सबसे नाजूक थी। किसी न किसी रूप से घर के अंदर हो या घर के बाहर उन्हें अत्याचार, शोषण, लांछ्न मिलते थे। इस लिए वे 'असूर्यमपस्या' बनने को मजबूर थीं। इन सबको दृष्टि में रखते हुए, अपनी रचनाओं के माध्यम से कवि सामाजिक –जागरण लाना चाहते हैं ताकि समाज की उन्नति हो सके।

अध्ययन क्षेत्र
एक संशुद्ध जनतांत्रिक समाज के गठन के उद्देश्य से कवि ने अपनी रचनाओं में जन जागरण और क्रांति के आह्वान करने वाले जिन संदेशों को जगह दी है, उन्हींको रेखांकित करना, वास्तविक हमारा अध्ययन क्षेत्र है। जनता की भाषा से गीटिनाट्यकार ने समाज में हो रहे शोषण, कुसंस्कार और सत्ता के घमण्ड के खिलाफ आवाज बुलंद की है और दर्शकों के मन में क्राति की भावना जगाई है। वे जानते थे कि इसके बिना समाज की विषमता दूर नहीं हो सकती है। यहाँ केवल धन की विषमता नहीं है, मन की विषमता को दूर करने की चेष्टा है। अतरू प्रगतिवाद से यह अब्बल दर्जे की चेतना है।

ओडिशा में उस समय लोगों में नशेबाजी बढ रही थी। खास करके समाज की निचली जात के लोगों में इसका बोलबाला था। नशे से पैसों की बरबादी तो होती थी, इसके साथ कई प्रकार की बीमारियों का शिकार लोग बनते थे। सामाजिक विश्रुंखला दिखाई देती थी। इसके प्रभाव से लोग हिताहित ज्ञान भूल जाते हैं और घर में तथा बाहर अनर्थ मचाते हैं। आहिस्ते– आहिस्ते ये लोग समाज के मुख्य–स्रोत से पिछड जाते हैं। जब तक इस बुरी लत से लोग पिण्ड नहीं छुडायेंगे, तब तक न उन लोगों की तरक्की

हो सकती है न समाज की। सबसे पहले लोगों की मानसिकता में बदलाव लाना अपरिहार्य है तभी जाकर लोग नशा न करने का संकल्प ले पायेंगे। नशा न करने की सलाह देते हुए कवि लिखते हैं

'छीइ छीइ मद पिइबि नाहीं मुँ कला पाणि परि दिशे
सेहि कला पाणि पेटरे पडिले चउद भुवन दिशे।'[1]

(काले रंग की शराब घ्रुण्य चीज है। इसे मैं नहीं पिऊँगा। यह पेट में जाते ही दिमाग फिर जाता है और व्यक्ति को एक भुवन क्या, चौदहरू भुवन दिखाई देने लग जाते हैं।)
'छिइ छिइ' शब्द में शराब के प्रति नफरत की भावना उजागर की गई है।ृपिइबि नाहीं' में वह व्यक्ति शराब न पीने का संकल्प लेता है। पंक्ति के अन्य सारे शब्द शराब की कमजोरियों को दर्शाते हैं। 'कंस बध' गीतिनाट्य में जब महाराजा कंस का एक दूत जो कि पियक्कड है, इस गीत को गाता हुआ रंगमंच पर आता है और संकल्प लेता है कि वह शराब नहीं पीयेगा तथा शराब की कमजोरियों को एक–एक करके गिनाता है तो जो दर्शक इसे देख रहे हैं उनके ऊपर सकारात्मक प्रभाव गिरेता ही है। क्योंकि वह पियक्कड बता देता है कि शराब की बदौलत उसकी ऐसी दुर्गति हो रही है एवं दर्शकों को समझा देता है कि यदि वे इसकी लत का शिकार बनेंगे तो उनकी भी इस प्रकार की दुर्गति होनेवाली है। 'स्यमंतकमणि हरण' गीतिनाट्य में एक दूत के मुख से अफिम सेवन की कुपरिणति का उजागर किया गया है ।

'बाडि वृति करि बिकिरि, आणुछन्ति भरि कि भरि
अफिम दोकान हरि निए मन दिनकु मणंति रातिकि।
न मिलिले टंका पैसा, चोरि पुणि हुअइ पेषा
आसि पडे दशा बढे पाप आशा काच मूले बिके मोतिकि।'[2]

(अफीम का नशेडी अपनी जमीन–जायदाद बेचकर अफिम खाता है। उसे दुनिया में सबसे आकर्षणीय जगह अफीम की दूकान लगती है। अफीम का सेवन करंने के बाद उसका दिमाग इस कदर फिर जाता है कि वह दिन को रात समझने लगता है। अफीम हासिल करने के लिए कांच के भाव पर वह सबसे कीमती मोती को भी बेच देता है। पैसा न मिले तो चोरी भी करता है।)
वैष्णव पाणि के हर गीतिनाट्य में यह संदेश दर्शकों को जाता है कि आखिर आसुरी प्रवृत्ति को शिकस्त मिलती है और अच्छे गुणों की जय–जयकार होती है। दर्शक देखते हैं कि किस प्रकार छल, छद्म, फरेव का माया–जाल फैला करके खल चरित्र सदगुण सम्पर्ण नायक एवं नायिका को कष्ट देते हैं तथा समाज में अव्यवस्था एवं विशृंखलता मचाते हैं लेकिन यह ज्यादा दिन तक नहीं टिकता है। खल चरित्रों को आखिर अपने दुष्कर्मों का पराभव मिलता है और वे पश्चाताप भी करते हैं। 'नल–दमयंती' गीतिनाट्य में ऐसा ही हुआ है। खल चरित्रृकलयुग' की वजह से राजा नल को अपना राज्य खोना पडता है। वे अपनी पत्नी से अलग हो जाते हैं। लेकिन यह ज्यादा दिन तक नहीं चलता है। आखिर कलयुग की हार होती है और वह पश्चाताप भी करता है।

'पटिला नाहीं मो छल–बल– कौशल रे
हटिला मो दम्भ चालि चालि एते काल रे ।'[3]

(मैंने अपना छल, बल, कौशल सबकुछ लगा दिया। लेकिन वे सब असफल हो गए। इतना सब कुछ कर हो चुकने के बाद मेरी शक्ति जबाब देने लगी है।)
जो कलयुग अपराजेय प्रतीत होता था आखिर उसकी यह हतोत्छाह स्थिति देख कर दर्शक झुम उठते हैं और सदगुणों को धारण करनेवाले नायक की प्रशंसा में शतमुखर बन जाते हैं। 'प्रबीर पतन' गीतिनाट्य में सत्ता के घमण्ड से चूर राणी ज्वालावती आखिर अपने किए पर पश्चाताप करती हुई अपने को आग के हवाले कर देती है और कवि का संदेश दर्शकों के लिए यह है कि जो व्यक्ति धर्म तथा सुनीति के मार्ग में रहता है उसे पहले तो संघर्ष करना पडता है लेकिन आखिर उसी की ही जीत होती है।

'ए धरारे धर्म सार, आन सरब अचिर
नाहिँ ता परिवर्त्तन देख चित्ते थिब चेति।
खल, पापी, देशद्रोही, बैष्णव द्विज कहि
ताहार आदर्श एहि राणी ज्वालावती।'[4]

(इस धरती में धर्म श्रेष्ठ है। उसमें किसी प्रकार का परिवर्त्तन नहीं हो सकता है। देख लो ! बाकी सब कुछ बदल जाते हैं। खल, पापी, देशद्रोहियों का आदर्श राणी ज्वालावती के अधपतन से इसका प्रमाण मिलता है।)
'जयद्रथ बध' गीतिनाट्य में छोटे से बच्चे अभिमन्यु को दुर्योधनादि सप्तरथी मिल कर मारते समय नियति के मुख से कवि कहलवाते हैं कि तुम लोग न्याय, धर्म को छोड चुके हो। जो लोग ऐसा करते हैं उन्हें आखिर नर्क– दण्ड भोगना पडता हैरू

'छाडि न्याय धरम कु आश्रिलणि अन्याय कु
अंते बास नरक करिब चिंताटा।'[5]

(तुम लोग न्याय, धर्म को छोडकर अन्याय का आश्रय लेने लगे हों। अंत समय में (मृत्यु के बाद) तुम लोगों को नर्क–बास का दण्ड मिलेगा। उस समय चिंता करते रहोगे कि यह हमारे किए का परिणाम है।)
अतरू कवि मानते हैं कि कर्म के आधार पर फल मिलता है। लोग जैसा कर्म करेंगे उसके अनुरूप फल उन्हें मिलेगा।ृचंद्रहास सुआंग' में दिखाया गया है कि दुसरे को मारने के लिए गढ्ढा खोदनेवाला व्यक्ति खुद उस गढ्ढे में गिरकर जीवन देता है। ऐसे व्यक्ति के दुर्दिन में उसकी तरफदारी करनेवाला कोई नहीं रहता है

'पर र चिंति अनिष्ट हराइले निज घट
झटकरि जाअ देख ताहा
आहा करिबाकु तहिं जणे केहि साहा नाहिं
पलाइ आसिलि जाणि एहा।'[6]

(दूसरे का अनिष्ट सोचकर उसने अपना शरीर गवाँया। जल्दी जा कर देखो। उसके लिए हमदर्दी दिखानेवाला वहाँ कोई नहीं है। इसे जान कर मैं वापस चला आया।)
दुष्ट अपने स्वार्थ के साधन के लिए दुसरे का जीवन तक ले लेने को तैयार हो जाता है। लेकिन उसे क्या मालूम कि इसके लिए उसे अपनी जान देनी पडेगी। यह कितना दर्दनाक है कि वह मर रहा है और उसको देखनेवाले लोग हँस रहे हैं। कोई भी हमदर्दी नहीं दिखाता है।
नारी अबला है लेकिन इस सृष्टि को सुंदर और आकर्षणीय वह बनाती है। स्नेह, श्रद्धा, शांति, प्रेम, ममता, सहनशीलता से बनी वह मनोरम मूर्ती है जिसके बिना इस सृष्टि की कल्पना तक नहीं की जा सकती है। उसके ऊपर किसी प्रकार अत्याचार अथवा उसकी इज्जत के साथ खिलवाड कतई बरदास्त योग्य नहीं है। 'गोसिंह बध' गीतिनाट्य में सत्यभामा का अपहरण गोसिंह राक्षस कर रहा था। उसी समय जपासुर के मुख से कवि यह संदेश सुनवाते हैं

'हरना हरना बरबरना कु दैत्यमणि पर नारि एहि हे
पडिब बिपत्ति जेनाबतिपति
न छिडा जश– केतने, छाडि जाअ ए रतने
छुअँ नाहिं नहिं हे ।'[7]

(हे दैत्यमणि ! दूसरे की नारी के अपहरण करने से बडी मुसीबत आ खडी हो जाती है। यश नष्ठ हो जाता है। इसलिये दूसरे की पत्नी को मत छुओ।)
जपासुर भी राक्षस था फिर भी वह गोसिंह राक्षस से उपदेश देता है कि दूसरे की रमणी का अपहरण करना सबसे बडा पाप है। इससे भारी मुसीवत आती है। ऐसे दुष्कर्म करनेवाले की प्रतिष्ठा मिट्टी में मिल जाती है। सत्ता और शक्ति की अहमिका से चूर होकर ऐसे दुष्कर्म को अनजाम देना नहीं चाहिये। पतन के द्वार को यह खोल देता है। जब एक राक्षस इस बात को समझ सकता है तब क्या इस दृश्य को देखनेवाले दर्शकों के मन में इस उपदेश का असर नहीं बैठ सकता है ? 'महिरावण बध' गीतिनाट्य में राणी मंदोधरी अपने पति रावण को समझाती है कि दूसरे की रमणी के अपहरण करने का मतलब है मुसीवत रूपी छतरी को अपने सिर के ऊपर खुद पकडना। चूँकि यह मुसीवत की है, सिर की रक्षा यह नहीं करेगी अपितु सिर को चकनाचूर करके छोडेगी। यह ऐसा पाप है जो सारी धन–सम्पदाओं का नाश कर डालेगा ।

'पर धन पर रमणी हरणेरे पराण मणि
रहिछि आपद नाशइ सम्पद शेषे शिरे धरे विपद छता।'[8]

(हे पति देव ! दूसरे के धन तथा दूसरे की रमणी के अपहरण में बडी मुसीवत छिपी हुई होती है। इससे सारी सम्पदायें नष्ट हो जाती है। मुसीवत की छतरी को अपने सिर के ऊपर मत पकडिये।)
रावण ने मंदोदरी की बात नहीं मानी। आखिर वही हुआ जो मंदोदरी बोल रही थी। देखनेवाले दर्शक भलि–भाँति समझ जाते हैं कि जब दूसरे की नारी का अपहरण करके महान–प्रतापी रावण टिक नहीं सका तो वे कैसे टिक पायेंगे ? केवल दूसरे की पत्नी नहीं, अपनी पत्नी (लक्ष्मी जी) का निरादर करके छोड देने का विषमय फल महाप्रभु जगन्नाथ जी को भोगना पडा। एक–एक दाने के लिए वे तरसने लगे। आखिर भिक्षा करने के लिए वे मजबूर बन गये एवं पश्चाताप करने लगे कि ृलक्ष्मी जी को उलाहना देकर छोडने का यह फल है जिसे वे भुगत रहे हैं'रू

'पाइबु काहिँ शासन बाडि–वृत्तिमान
तेजी लक्ष्मी परा नारी भिक्षान्ने जीवन
पोषु आम्भे बुलि गो । आम्भ दशा जेन्हें बणमल्ली गो।'[9]

(हमें जमीन–जायदाद, शासन कहाँ से मिलेगा ? लक्ष्मी जैसी पत्नी को छोड कर हम भिक्षा करके जीवन जी रहे हैं। अब हमारी दशा जँगल की मल्ली (फूल) की जैसी हो गई है। अर्थात हमारा आदर करनेवाला कोई नहीं रहा है।)
इस गीतिनाट्य से दर्शकों को यह शिक्षा मिलती है कि बिना कसूर के अपनी पत्नी का भी अनादर कोई करे तो उसकी हालत जगन्नाथ जी की तरह बडी नाजूक बन जायेगी। आखिर जगन्नाथ जी को अपनी पत्नी से माफी माँगनी पडी थी।
आजादी की बराबरी दुनियाँ की कोई दूसरी सम्पदा नहीं कर सकती है। यह जिसके पास है वह सबसे अमीर व्यक्ति है। वैष्णव पाणि ने अपने अनेकानेक गीतिनाट्य में ऐसे संदेशों को दर्शकों के सामने रखा है। तब के समय की माँग इसका दूसरा कारण था । बैष्णव पाणि के समय महात्मा गांधी जी के नेतृत्व में देश में आजादी का आंदोलन चल रहा था। लोग सत्याग्रह कर रहे थे एवं राजकीय नौकरी को छोड रहे थे। ऐसे में नागरिकों को आंदोलन के प्रति जागरुक कराने की बडी जिम्मेदारी साहित्यकार एवं कलाकरों के ऊपर न्यस्त थी। एक कवि होने के नाते बैष्णव पाणि इससे अछूते कैसे रह सकते थे ? परंतु यहाँ केवल राष्ट्र–प्रेम ही बात नहीं है, व्यक्तिगत जीवन में भी यदि स्वतंत्रता नहीं है तो व्यक्ति को आनंद कैसे मिल सकता है ? अपने प्रथम गीतिनाट्य 'मेघनाद बध' में एक दूत के मुख से कवि कहलवाते हैं कि नौकरी करनेवाले को सुख कहाँ मिलता है ? उसकी आजादी नहीं रहती है। उसे अपने मालिक की तानें किसी न किसी रूप से सुननी पडती है। दूत अपनी तजुर्बे से यह बात बोलता है तथा दर्शकों को नौकरी न करने की सलाह देता है। बिना नौकरी किए अपने उद्यम से क्या लोग अपने परिवार का गुजारा नहीं कर सकते हैं ?

'परपंच पर चाकिरि पोडा
प्राण गले त नाहिँ मोर लोडा, निति केते खाइबि कानमोडा।
तिले नाहिँ सुख छाति दक दक, सर्वदा पडे हातजोडा थोडा
जेबे डेरि हेला आसिबाकु बसि जिब घोडा कोरडा
निश मोडि देखांति आखि जोडा, कहुथांति वचन कडा कडा।' [10]

(नौकरी तुच्छ है। मेरी जान चली जाए तो फिर भी यह नौकरी नहीं करुँगा। इससे पल–भर का भी सुख नहीं मिलता है। मालिक के सामने हमेशॉ हाथ जोडना पडता है। थोडी सी गलती पर वे अपनी मूँछों को मरोडते हुए एवं आँखों को तरेरते हुए कड्वी बातें बोलते हैं जो हृदय में चुभ जाती हैं।)
जिस काम में आजादी नहीं है उसमें कैसा सुख है ? जीवन में रूपया सब कुछ नहीं है। सम्मान और प्रतीष्ठा के साथ रूपया कमाना सबसे बडी बात है।

निष्कर्ष

वैष्णव पाणि के गीतिनाट्यों में निम्नलिखित जनवादी चेतनाओं का उल्लेख मिलता है।

1. नशाखोरी तथा सामाजिक कुसंस्कार आदि व्यक्तिविशेष एवं समाज की प्रगति के लिए प्रतिबंधक हैं। इन पर रोक लगाना जरूरी है।
2. छल, फरेव, प्रपंचता आदि का सहारा जो लेकर अपना उल्लू सीधा करना चाहते हैं उन्हें समझना चाहिये कि आखिर इन सबकी हार तथा बेइज्ज्ती ही होती है ।
3. शोषित वर्ग अपने अधिकारों को जानें। उनका जन्म शोषण को झेलने के लिये नहीं हुआ है।
4. नारी की इज्जत और आवरु के साथ खिलवाड करना सबसे बडा अपराध है।
5. आजादी का सुख सबसे श्रेष्ठ सुख है ।
6. आदमी को गुरुत्व देने का पैमाना धन नहीं होना चाहिये। स्नेह, सहानुभूति, त्याग, तितिक्षा समाज तथा देश की उन्नति के लिए काम्य है।

सन्दर्भ सूची

1. कंस बध– वैष्णव पाणि – वैष्णव पाणि ग्रंथावली (भाग –1)– वैष्णव पाणि– ग्रंथ मंदिर, संस्करण– 1968, पृ0– 75
2. स्यमंतकमणि हरण– वैष्णव पाणि–– वैष्णव पाणि ग्रंथावली (भाग –4)– ग्रंथ मंदिर, संस्करण– 2010, पृ0–21
3. नल–दमयंती–वैष्णव पाणि – वैष्णव पाणि ग्रंथावली (भाग –1)– वैष्णव पाणि– ग्रंथ मंदिर, संस्करण– 1968, पृ0–176
4. प्रबीर दृ पतन–– वैष्णव पाणि ग्रंथावली (भाग –2)– वैष्णव पाणि– ग्रंथ मंदिर, संस्करण– 2009, पृ0– 311

5. जयद्रथ बध– वैष्णव पाणि ग्रंथावली (भाग –3)– वैष्णव पाणि– ग्रंथ मंदिर, संस्करण– 2009, पृ0–389
6. चंद्रहास सुआंग –– वैष्णव पाणि ग्रंथावली (भाग –5)–वैष्णव पाणि– ग्रंथ मंदिर, संस्करण– 2010, पृ0–219
7. गोसिंह बध– वैष्णव पाणि ग्रंथावली (भाग –4)– वैष्णव पाणि– ग्रंथ मंदिर, संस्करण– 2010, पृ0– 117
8. महिरावण वध – वैष्णव पाणि ग्रंथावली (भाग –2)– वैष्णव पाणि– ग्रंथ मंदिर, संस्करण– 2005, पृ0–140
9. लक्ष्मी पूजा – वैष्णव पाणि ग्रंथावली (भाग –2)– वैष्णव पाणि– ग्रंथ मंदिर, संस्करण– 2005, पृ0–30 मेघनाद बध – वैष्णव पाणि ग्रंथावली (भाग दृ 2) दृ वैष्णव पाणि– ग्रंथ मंदिर, संस्करण– 2005, पृ0– 167–167.